International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-01-2020; Accepted: 04-02-2020; Published: 02-03-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 12-16

पर्यावरण संकट और विश्व

अरबिन्द कुमार
Research Associate, Political Science, DAV College, Abohar, Punjab, India

सारांश
आज के समय में पर्यावरण का संकट गहराता जा रहा है और इसके साथ साथ ही पर्यावरण की जो मुश्किलें है, वह भी काफी हद तक गंभीर होती जा रही है | अब यह किसी एक की समस्या ना रहे कर पुरे विश्व की समस्या बन चुकी है | विश्व के प्रभुत्व- संम्पन देश अपनी भूगोलिक जरूरतों को नजर अंदाज़ करके, अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में लगे है, इसके कारण ही हमे पर्यावरण संकट का सामना करना पड़ रहा है और यह कम होने की बाजाये दिन- ब- दिन बढ़ता ही जा रहा है | किसी देश में तो पर्यावरण अपात्काल तक की नौबत आ चुकी है | देश का शासन चलाने वाली सरकारें इस समस्या से निज़ात पाने के लिए कुछ प्रयत्न कर रही है, पर वह इसके लिए नाक़ाफी साबित हो रहे है | क्योंकि आज कल हर देश आर्थिक उन्नेत्ति करने में अव्वल नंबर पर रहना रहना चाहता है, पूरा विश्व इस अंधी दौड़ में शामिल हो चूका है | इस लालच में उनको पर्यावरण का नुकसान नज़र नहीं आ रहा | अपनी आर्थिक लालसाओं को पूरा करने के लिए इनका मानना है की देश की उन्नति के लिए थोड़ा बहुत पर्यावरण नुकसान सहन करना ही पड़ता है | पर क्या हम अपने वर्तमान को स्वारने के चक्र में अपने भविष्यें का अपने ही हाथों गला घोट रहे है |

मूल शब्द: पर्यावरण, संकट, मुश्किलें, विश्व

प्रस्तावना

पर्यावरण और व्यक्ति के क्रिया कलापो में गहरा संबंध है | मनुष्य को भी पर्यावरण के साथ सतुंलन बनाकर चलना पड़ता है | और मानव ने यह सतुंलन सदियों तक बनाकर भी रखा | जिस के कारण प्रकृति और मानव दोनों एक दूसरे को नुकसान पहुचाये बिना अपना विकास कर रहे थे, पर पिछले कुछ वर्षो में इस सतुंलन में बहुत बदलाव आया है | अब मानव अपना अत्यधिक और तेज़ी के साथ विकास करने के लिए प्रकृति का दोहन कर रहा है | जिस कारण पर्यावरण की दशा बिगड़ रही है | मानव के अति लालच के कारण आज पर्यावरण का संकट बढ़ता ही जा रहा है और इस से ज्यादा चिंता का विषय मानव की अनदेखी है | वह पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करके लगातार आर्थिक उन्नति करने में लगा हुआ है | पर इंसान यह भूल रहा है कि पर्यावरण के साथ सतुंलन बनायें बिना हम अपना स्थायी रूप से विकास नहीं कर सकते और ना ही अपने अस्तित्व को बचा कर रख सकते है |क्योंकि इंसान और पर्यावरण दोनों एक-दूसरे के लिए बहुत ज्यादा जरूरी है |

असंतुलन किसी भी परस्थितिं को भयानक रूप दे सकती है | इसके नतीजे हमारे लिए गंभीर साबित हो सकते है | पर्यावरण से संबंधित मनुष्य की ज़रूरतों को देखते हुए महात्मा गाँधी जी ने कहा था की, ' पर्यावरण में वो सब कुछ मौजूद है, जो मनुष्य की हर प्रकार की ज़रूरतों को पूरा कर सकते है, पर यह इसके लालच को पूरा करने में सक्षम नहीं है |" गांधी जी की यह बात आज के समय के अनुसार सही बैंठती है |

आज हर देश अपनी आर्थिक उन्नति करना चाहता है | इसके लिए वो कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार है | विश्व में अव्वल रहने या बनने के लिए वह सब कुछ दांव पर लगा रहा है | इस कारण आर्थिक उन्नति और पर्यावरण के सतुंलन में फ़ासला बहुत बढ़ गया है |मानव की पर्यावरण को नुकसान पहुंचने वाली प्रंवृति हमेशा से ही रही है | जब से मानव सभ्यता का जन्म हुआ है, उसने *85* फीसदी जंगली जीव जन्तुओ और पेड़ पोंधों को खत्म कर दिया है | जिसके कारण कुछ प्रंजातियां लुप्त हो गयी है और कुछ अपना अस्तित्व बचाने के लिए लगातार संघर्ष कर रही है | मानव के द्वारा कल तक किये गए कार्यो का आज के समय में या आने वाले कल में नुकसान उठाना पड़ेगा और तब हम चांहकर भी इस होने वाली त्रासदी को नहीं रोक सकेंगे | आज उसकी आँखों पर लालच का पर्दा पड़ा हुआ है, तो उसे होने वाला नुकसान दिखाई नहीं दे रहा है | पर अब शायद वह दिन दूर नहीं है जब पूरी मानव सभ्यता को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पंड़ेगे |

पर अब कही ना कही कई मुल्कों में लोगो को जो उन्होंने पर्यावरण का नुकसान किया उसका एहसास होने लगा है, क्योंकि अब उन्हें अपना भविष्य अंधकार में नज़र आ रहा है | इसी कारण कई पर्यावरण सक्रियवादी सरकारों के पर्यावरण संबंधी नीतियों के खिलाफ आवाज़ उठा रहे है और उनकी पर्यावरण शोषण की नीति को बदलने का प्रयास किया जा रहा है | आप अगर प्रकृति को नष्ट कर अपने आर्थिक एजेंडे को पूरा कर रहे हो और जिसके कारण पर्यावरण को लगातार नष्ट किया जा रहा है तो यह उसी प्रकार है जैसे कोई आप को एक समय ज्यादा पैसे देकर उसके बाद आप का गला ही काट दे | जिस कारण आप के साथ-साथ आप की आने वाली पुश्तो या प्रजाति को भी मार दिया जाए | इस लिए आज आप चाहा कर भी पर्यावरण संकट को अनदेखां नहीं कर सकते |

लगातार हो रहे जलवायु परिवर्तन के कारण यह संकट बढ़ता ही जा रहा है | स्वीडन की रहने वाली १६ वर्ष की लड़की **ग्रेटां थनबर्ग** लगातार इस समस्या के खिलाफ लड़ रही है | ग्रेटां ने स्वीडन और संयुक्त राष्ट्र में भाषण देकर विश्व की सभी महाशक्तियो को अवगत कराया है और संभलने की चेतावनी भी दी है | की आप यु हमारे जैसे बच्चों का भविष्य खतरे में नहीं डाल सकते | साथ ही साथ पर्यावरण को लगातार हो रहे नुकसान की तरफ ध्यान ना देने के कारण उसने अपना गुस्सा भी प्रंगट किया था ताकि विश्व के सबसे आमिर और आर्थिक संम्पन देश अपनी उन्नति के साथ पर्यावरण संरक्षण की तरफ भी ध्यान दे |

यह पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करने का ही नतीजा था की दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में *5* हज़ार ऊंटों को गोली मार दी गयी | यह घटना सुनने में भी

क्रूर और अमानवीय व्यव्हार लगता है | दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है | यह इलाका पूरी तरह से सूखे से प्रभावित है | यहां कुल 10 हज़ार ऊंटों को गोली मारने का आदेश दिया गया है | पर सूखे की वजह से इन बेजुबानो को बिना गलती के मार देना कहा तक उचित है | यह क्रूर घटना हमे सोचने पर मजबूर कर देती है की हम पर्यावरण को किस दिशा की तरफ लेकर जा रहे है | जिस ग्लोबल वार्मिंग का हम सामना कर रहे है, वह पर्यावरण को नुकसान पहुचानें का ही नतीजा है | यहां लोगो ने सरकार से यह शिकायत की यह ऊंट पानी की तलाश में उनके घर में घुस जाते है | पर इन निर्दोश जानवरों ने कभी शिकायत नहीं की इंसानी दख़ल से हमें नुकसान हो रहा है, हमारे आवास नष्ट हो रहे है | आज हमारे कारण ही इन 10 हज़ार ऊंटों को जान गवानी पड़ी | कुछ अत्ति बुद्धिजीवी विज्ञानकों का दावा था कि इन ऊंटों की वजह से ही एक वर्ष में एक टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर मीथेन का उत्सृजन करते है | पर जो जहरीली गैंसे इंसान के गाड़ियों का प्रयोग करने, सुविधा जनक चीजों से पैदा होती है, उसका कोई भी डाटा जारी नहीं किया गया | क्योंकि हमने अपनी कारो को चलाने के लिए इनकी सांसें रोक दी | इंसान ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीने के लिए, उसके रस्ते में आने वाली हर चीज़ को वो खत्म करना चाहता है |

एक तरफ दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया सूखे की मार झेल रहा है तो दूसरी तरफ बुशफायर *(*जंगल की आग *)* के कारण पर्यावरण पर गहरा संकट छाया हुआ है | ऑस्ट्रेलिया में तापमान की बढ़ोतरी लगातार दर्ज़ की जा रही है | जिस कारण यह आग लगातार फैलती जा रही है | अब तक यह आग 12.35 मिलियन एकड़ जंगल को अपनी चपेट में ले चूकी है | पिछले पांच महीने में इस आग में झूलसने से 50 करोड़ जानवरों की मौत हो चुकी है | जिसमें स्तनधारी पशु, पक्षी और रेंगने वाले जींव सभी शामिल है | यह संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है | इस आग में सिर्फ 35 लोगों की मौत हुई है | क्योंकि इंसान ने तो सुरक्षित स्थान पर पहुंच कर अपनी जान बचाली पर यह बेजुबान ऐसा करने में नाकाम रहे | बहुत से जानवरों की संख्या पहले से आधी रह गयी है | वो अब राख़ के ढेर में तब्दील हो चुके है | इस आग का असर सिर्फ ऑस्ट्रेलिया में ही नहीं बल्कि न्यूज़ीलैंड में भी देखने को मिला है | यहां से उठे धुएं के कारण यहां एक नारंगी रंग की परत पुरे आसमान में जमी हुयी दिखाई दी | इस धुंए ने दक्षिणी द्वीप के सफेद हिमनद को भूरे रंग में रंग दिया | सिर्फ अब ही नहीं आने वाले समय में इस आग के और भी गंभीर नतीजे देखने को मिल सकते है | स्वास्थ्य से संबंधित दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है |

जंगल में आग की घटनाएं सिर्फ ऑस्ट्रेलिया तक सिमित नहीं है, यह दुनिया के फेफड़े कहलाये जाने वाले अमेज़न ब्राज़ील के जंगलो तक पहुंच गई है | ब्राज़ील के जंगलों की यह आग एक वर्ष में अब तक 80 हज़ार से अधिक घटनाएं सामने आई है | इस वर्ष आग कि घटनाओं में 85 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है | जो पहले से कई गुणा ज्यादा है | ब्राज़ील में अमेज़न के ६० फीसदी जंगल पाए जाते है | ब्राज़ील के बहुत से राज्य आग की चपेट में आऐ हुए है | पुरे विश्व के पर्यावरण में संतुलन बनाकर रखने वाले अमेज़न खुद अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे है | अमेज़न की आग से सिर्फ ब्राज़ील ही नहीं पुरे विश्व के लोग प्रभावित होंगे | इसका असर हमारे पर्यावरण पर भी पड़ेगा | यह जलवायु परिवर्तन के लिए भी ज़िम्मेवार होगा | पुरे विश्व में अमेज़न ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए खास महत्व रखते है | अगर अमेज़न जैसे जंगल खत्म होते है तो ग्लोबल वार्मिंग की रफ्तार तेज़ी के साथ बढ़ेगी | जिसे बाद में रोक पाना मुश्किल होगा | समुद्र का तापमान तेज़ी से बढ़ेगा और जिस कारण चक्रंवाती तूफानों के आने का ख़तरा बढ़ जायेगा | अमेज़न के जंगलों की आग को सरकार के द्वारा ज्यादा गंभीरता से ना लेते हुए देख सक्रियतावादी और प्रकृति प्रेमी सड़को पर उतर कर विरोध जताया | इस आग पर जल्दी से जल्दी काबू पाने कि मांग उठने लगी | अब प्रश्न यह उठता है कि ज्यादा समय तक पानी से तर रहने वाले जंगलों में आग कैसे लगी *?* अगर हम कहते है कि इस आग के पीछे कोई कूदरती कारण रहा होगा, तो हमारा सोचना बिलकुल गलत है | ब्राज़ील की एक संस्था अमेज़न वॉच के प्रोग्राम में यह बताया गया कि यहां के लोग खेती व पशूपालन के लिए लगातार ज़मीन साफ़ कर रहे है | यहां अक्सर ज़मीन साफ़ करने के लिए आग का प्रयोग किया जाता है | यही आग कभी-कभी जन जंगलों में फैल कर भयानक रूप धारण कर लेती है | तो इस त्रासदी का कारण भी 100 फीसदी मनुष्य ही है | मनुष्य ही पर्यावरण के ख़ात्मे और वन्य जीवों की मौत का ज़िम्मेवार है | हम खुद जाकर अमेज़न के जंगलों में जाकर आग तो नहीं बूझा सकते पर लोगों को इसके बारे में जागरूक कर पर्यावरण को नष्ट होने से बचा सकते है | ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाकर एक छोटी-सी पहल कि जा सकती है |

आज के समय में जो सक्रंमण बीमारियां फैल रह रही है, वो कहीं ना कहीं हमारे द्वारा पर्यावरण कि उलटी दिशा में चलने के कारण हो रहा है | आये रोज़ एक नई बीमारी हमारे दरवाज़े पर दस्तक दे देती है | जैसे स्वाईन फ्लू, ईबोला वायरस, सॉर्स और कोरोना वायरस उसका ही नतीजा है | चीन से पैदा हुए कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में दहस्त का माहौल पैदा कर दिया है | अभी तक 22 देशों में इस वायरस कि पुष्टि हो चुकी है | जिसमें थाईलैंड, जापान, सिंगापूर, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी और अरब अमीरात जैसे देश शामिल है | इन देशों की श्रेणी में भारत का नाम भी शामिल हो चूका है | केरल और देश के बाकि कुछ हिस्सों में वायरस के लछण देखने को मिले है | अभी तक पुरे विश्व में 12 हज़ार से अधिक मामले सामने आ चुके है | विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कुछ दिनों में यह वायरस पुरे विश्व को अपनी चपेट में ले सकता है, जिन देशों में अभी यह फैला नहीं, उनके लिए अभी ख़तरा टला नहीं है | चीन में अब तक मरने वालों की संख्या 900 से पर पहुंच चुकी है | यह वायरस चीन के वुहान से पैदा हुआ था | इस वायरस से संक्रमित होने वाले व्यक्ति को ज़ुखाम और साँस लेने में भी दिक्क्त आती है | अभी तक कोई भी देश इसका इलाज़ नहीं खोज़ पाया है | यह वायरस प्रकृति के विपरीत कार्य करने का नजीता है | क्योंकि चीन में जानवरों का गैर-क़ानूनी व्यापार तेज़ी से बढ़ रहा है | इन सभी जीवों का प्रयोग खाने के लिए किया जाता है | यह वायरस वुहान में समुंद्री जीवों के बाज़ार से निकला है | यहां सर्प, रैकून जैसे जीवों का अवैध व्यापर धड़ेले से किया जा रहा है | चीन दुनिया में जानवरों का सबसे बड़ा उपभोग्ता है | विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार यह चंमगादड़ से भी फैला हुआ हो सकता है, पर अभी इसके पुख़्ता प्रमाण नहीं मिले है | चीन में चमगादड़ का सूप अक्सर प्रयोग में लिया जाता है | पर अभी इसकी पुष्टि होना बाक़ी है कि असल में यह किस से फैला है और इन्सानों में कैसे फैला | चीन में बाघ के अंडकोष, चमगादड़ का सूप, भुना हुआ कोबरा, भालू के पंजे, चूहे, बिल्लियां, कुत्ते व कई दुर्लभ चिड़ियों का प्रयोग खाने के लिए किया जाता है | यह सब पर्यावरण के विपरीत कार्य नहीं तो और क्या है *?* इंसान का शरीर शाकाहारी खाना खाने से भी ठीक रह सकता है, पर यह अपनी जीभ के सवाद के लिए इन निर्दोश जानवरों को मार रहा है | चीन के लोगों कि इस करतूत से पुरे विश्व के लोगों को संकट में

डाल दिया है | अभी भी लोग इस घटना से कुछ सीख लेते हुए प्रकृति के अनुकूल भोजन का प्रयोग करना चाहिए | जियो और जीने दो के सिद्धांत के अनुसार जानवरों को भी जीने का हक़ है, उन्हें इनके क़ुदरती आवास में जीने दो | वह जंगल में ही अच्छे लगते है, ना की खाने वाले मेज़ पर |अगर हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो पर्यावरण को लेकर हमें अपनी सोच बदलनी ही पड़ेगी |

पूरे विश्व में लगातार हवा का गुण स्तर गिर रहा है | हवा को दूषित करने के मामले में अमेरिका, चीन, और जापान जैसे देश सबसे आगे है | पर जब पर्यावरण को संरक्षित करने की बात आती है तो यह सब सबसे से पीछे होते है| भारत भी हवा को दूषित करने के मामले में ज्यादा पीछे नहीं है | विभिन्तां में एकता के लिए जानने जाने वाला भारत अब सब से प्रंदुषित देशों में सब से अव्वल आता है | भारत में पर्यावरण से संबंधित ख़तरा लगातार बढ़ता ही जा रहा है | दिल्ली विश्व में सबसे प्रदूषित शहरों की श्रेणी में आता है, इसके इलावा चेन्नई, कंलकता और मुंबई जैसे महानगरों में यह समस्या बढ़ती ही जा रही है | लोगो को यहाँ साँस लेने में दिक्क्तों का सामना करना पड़ रहा है | साँस से संबंधित बीमारियों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है | भारत सरकार लगातार कुछ कानूनों और प्रावधानों से पर्यावरण को संरक्षित करने की कोशिश कर रही है | पर्यावरण की समस्या से संबंधित संसद में प्रस्ताव लाऐ गए है, की किस प्रकार भारत में बढ़ते हुए प्रंदुषण को नियंत्रित करके कम किया जा सकता है | इन बड़े शहरों में ट्रेफ़िंक हद से ज्यादा बढ़ गया है, इस वजह से क्लोरोफ्लोरो कार्बन की मात्रा हवा में बढ़ गयी है और हवा साँस लेने के लायक नहीं रही है |

दिल्ली-एनसीआर में पिछले कुछ वर्षो से यह समस्या काफी प्रबल दिखाई दे रही है | यहां सितम्बर और दिसंबर में धुँआं व स्मोग काफी बढ़ जाता है | सांस से संबंधित बीमारियों वाले लोगो को बहुत दिक्क़तों का सामना करना पड़ता है | दृश्यता का प्रतिंसत भी काफी कम हो जाता है | गाड़ी चलने में काफी मुस्किलो का सामना करना पड़ता है | दिल्ली में होने वाले इस प्रदूषण के लिए अक्सर इन तीन राज्यों को जिम्मेदार ठहरया जाता है - पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश | यह तीन राज्ये दिल्ली की सीमा के बिलकुल पास पड़ते है और यह धान या चावल की खेती की जाती है | धान की फसल लेने के बाद बची हुयी परालीं को यह किसान खेत में ही जला देते है | इस कारण यहाँ से पैदा होने वाला धुँआं दिल्ली की आबो- हवा में शामिल हो जाता है | और यह समस्या दो-तीन महीनों बनी रहती है | यह समस्या कोई एक या दो साल की नहीं है, हर वर्ष ऐसा ही होता है और सरकारें भी हर वर्ष इसे रोकने में नाकाम रहती है | इस धुँऐ के कारण दिल्ली के साथ-साथ उन तीन राज्यों के लोगो को भी समस्या का सामना करना पड़ता है | चारों तरफ धुँआं ही धुँआं नज़र आता है | इन राज्यों की सरकार किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए उन्हें जागरूक करती है, पराली जलाने से होने वाले नुकसानों से लोगो को अवगत कराया जाता है | खेत की मिट्टी के पोंशक तत्व जलाने से नष्ट हो जाते है | इसके इलांवा सरकार किसानों को पराली खेत के अंदर ही दबाने वाले किसानी औंजारों को सब्सिडी देती है | पर यह औंजार छोटे किसानों की पहुंच से बहुत दूर होते है | वह सब्सिडी देने के बाद भी उन्हें नहीं खरीद सकते | फिर वहीं दिक्क़त किसानों के सामने आ जाती है की वह इस पराली का निपटारा कैसे करें ? अगर यह किसान ट्रेक्टर का प्रयोग करके पराली को दबाने का प्रयास करते है तो डीज़ल का खर्च ज्यादा बढ़ जाता है, जिसे एक दो एकड़ वाला किसान सहन नहीं कर सकता, इस बोझ से बचने के लिए किसान नाड़ को आग लगा देता है |

पंजाब सरकार पराली ना जलाने वाले किसानों के लिए मुंहावजे की राशि प्रदान करने की स्कीम भी लेकर आयी, पर यह राशि किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए काफी नहीं थी | पर कुछ किसानों ने जागरूक होकर पराली जलाना बंद भी किया है, पर यह संख्या पराली जलाने वालो से काफी कम है | पंजाब की सरकार स्टेंलाइट के जरिऐं पराली जलाने वाले किसानों का चालान कर रही है | और जुरमाना वसूल कर रही है | पर सरकारों की ऐसी बेअसर कोशिशें लगातार नाकाम हो रही है | ना इन तरीकों से पराली जलाने वालो के आंकड़े कम हो रहे है और ना कहीं हवा प्रदूषण कम हो रहा है |

हमारी संसद में जब दिल्ली के प्रदूषण पर बहस होती है तब कुछ सांसदों की तरफ से अनसुलझे सुझाव भी आते है की पराली के सभांलने को मंनरेगा में शामिल करना चाहिए | ताकि रोज़गार के साथ-साथ पराली का भी ठीक से हल हो सकेगा | पराली का प्रयोग थर्मल पंलांट और विधुत ऊर्जा पैदा करने में किया जा सके | इन सही सुझावों के बावजूद कोई भी ज्यादा कारगर साबित नहीं हुआ | किसानों के द्वारा डीज़ल पर सब्सिडी करने की मांग भी कई बार की जा चुकी है, ताकि छोटे किसानों की कुछ मदद हो सके, पर इस योजना को कभी भी अम्ल में नहीं लाया गया |और आज तक कुछ भी ईच्छाजनक नतीजे देखने को नहीं मिले है |

पराली को कौन और क्यों जला रहा है, इससे ज्यादा मंहत्वपुर्ण बात यह है कि इसका नुकसान सभी को हो रहा है | सुप्रीम कोर्ट ने स्वच्छ हवा लेने की अधिकार को मौलिक अधिकारों के सामान दर्जा दिया है क्योंकि अंनुछेद *21* में जीवन के अधिकार में साफ हवा में साँस लेने का अधिकार भी सम्मिलित है | इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को हवा प्रदूषित करने का अधिकार नहीं है | वायु प्रदूषित करना हमारे मौलिक अधिकारों का उलघंन है | हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने के कारण यह सरकार की जिम्मेंवारी बनती है कि वो हमे शुद्ध वातावरण मुहैया करायें |

दीवाली पर पटाके चलाने पर सुप्रीम कोर्ट की पाबंदी सुप्रीम कोर्ट ने व्यक्ति के जीवन के अधिकार को सुरक्षित करने के लिए ही यह पाबंदी लगाई थी | क्योंकि पटाको के प्रयोग से प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ जाता है | लिंहाजा यह मद्देनज़र रखते हुए दिल्ली एनसीआर में और सभी राज्यों में एक निश्चित समय के बाद पटाको के प्रयोग पर पूर्ण पाबंदी लगा दी | अगर कोई कोर्ट के आदेश का उलघंन करता पाया गया तो तीन वर्ष की सजा के साथ जुर्माने का भी प्रावधान था | इसके साथ ही कोर्ट के आदेश पर राज्यों में प्रंदुषण रोकने के लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम और वायु प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम लागू किये गए, व राज्य नियंत्रण बोर्ड और राष्ट्रीय हंरित न्यायाधिकरण का गठन भी किया गया | ताकि सभी जगह कोर्ट के आदेश का गंभीरता से अंनूपालन हो सके |

सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश के बावजूद दिल्ली में हवा की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं देखा गया | पर मुश्किल तो यह है की कोर्ट का आदेश भी भारत के बहुत से क्षेत्रों में लागू भी नहीं हुआ | कोर्ट के आदेश और कानून दोनों प्रंदुषण को रोकने में नाकाम साबित हो रहे है | सर्वोच्च कोर्ट ने दिल्ली एनसीआर में हवा प्रंदुषण का सूचकांक कम ना होने के कारण प्राधिकारियों को फटकार भी लगाई | शीर्ष कोर्ट ने कहा की दूषित हवा के कारण लोग अपनी ज़िंदगी को खत्म होते देख रहे है और सरकार हर बार की तरह नाकाम साबित हो रही है |

स्टेट ऑफ़ ग्लोबल एयर रिपोर्ट 2019 के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण के कारण लगभग 12 लाख लोगों की मौत हो गयी और अगर हम दूसरी

बीमारियों जैसे मधुमेह, दिल का दौरा पड़ना, साँस लेने में दिक्कत व अस्थमा, फेफड़े का कैंसर को शामिल करने के बाद यह आंकड़ा 50 लाख तक पहुंच जाता है | कुछ ऐसे मरने वाले भी लोग शामिल होते है जिनके होने और मरने का डाटा सरकार के पास नहीं होता |

वन्य जीवन के अंत और उसके परिणामों के असर का मुद्दा संसद के दोनों सदनों में देखने को मिलता है | इस बार जब राज्य सभा में मथुरा से सांसद हेमा मालिनी ने यह मुद्दा उठाया की पहले मथुरा के आस-पास घना जंगल देखने को मिलता था, पर अब वो नहीं है | बस कुछ ही पेड़ बचे है बाकि काट लिए गए है | इस कारण वहां रहने वाले वन्य प्राणी शहर की तरफ आ रहे है | मथुरा में बंदरों से संबंधित घंटनाये बढ़ती ही जा रही है, क्योंकि पेड़ो के कटने की वजह से उनका कुदरती आवास खत्म हो गया है | इस कारण हेमा मालिनी ने मांग रखी कि यहां बंदरों पर मंडराते संकट को दूर करने के लिए बंदर सफ़ारी शुरू करके उनको संरक्षित किया जा सके | लगातार पेड़ो को काटने से वन्य जीवन पर गहरा असर पड़ रहा है | कई वन्य जीवों के खत्म और लुप्त होने का ख़तरा लगातार बढ़ रहा है |

अगर हम दिल्ली एनसीआर की बात करे तो वहां कोर्ट के सख्त रवैय के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने कुछ उपचांरिक सुधार करने के प्रयास से वह ओड- ईवन नियम को लागू किया | इस नियम के तहत ही गाड़ियों का चलना अनिवार्यें कर दिया गया | यह नियम दिल्ली सरकार ने मोंटर व्हीकल एक्ट की धारा 115 में मिली शक्तियों का प्रयोग करते हुए लागू किया गया | इस धारा में राज्यें सरकारों को वाहनों से संबंधित क़ानून बनाने का अधिकार दिया हुआ है | इसी शक्ति का प्रयोग करते हुए दिल्ली सरकार ने यह नियम लागू किया | ताकि सड़को पर वाहनों की आवाजाही को कम किया जा सके | इस कारण एक दिन ऑड और एक दिन ईवन नंबर की गाड़ी चलाने की इजाज़त दी गयी |ताकि सड़को पर ट्रैफिक कम हो और प्रदूषण में कमी की जा सके |

इस समय हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम पर्यावरण और विकास को एक-दूसरे का विरोधी समझने लगे है और हमे यह लगने लगा है कि अगर हमे आर्थिक विकास करना है तो पर्यावरण संबंधी नुकसान झेलना ही पड़ेगा | यह दोनों साथ-साथ एक सामान नहीं चल सकते | मुंबई - अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए लगभग 32,000 से ज्यादा पेड़ो की बलि दे दी गयी | अभी भी यह कार्य पूरा नहीं हुआ है | एक किसी भी पौधे को पेड़ बनने में 5 से 10 वर्ष तक लग जाते है, पर पेड़ को काटने में 5 सेकंड से भी कम समय लगता है | एक साथ इतनी संख्या में पेड़ काटने से पर्यावरण और वन्य जीवन बहुत प्रभावित होगा | पता नहीं कितने ही वन्य प्राणियो का कुदरती आवास खत्म हो जायेगा, फिर वही जीव रिहायशी इलाकों में आते है और मोंब लीचिंग का शिकार हो जाते है | इस प्रोजेक्ट को लेकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का बयान आया कि ' कोई भी प्रोजेक्ट बिना पेड़ काटे पूरा नहीं हो सकता '| फडणवीस का यह भी तर्क था कि लंबे समय के हिसाब से मेट्रो कार्बन उत्सर्जन में कमी लाएगा, तो पेड़ो को काटना इतना बड़ा मुद्दा नहीं होना चाहिए | जो लोग इस मेट्रो प्रोजेक्ट का विरोध कर रहे है, उन्हें चीन या जापान से पूछना चाहिए की उन्हे कितना फायदा हुआ या नहीं | इन जैसी ट्रेनों के कारण ही उन्होंने ने बहुत तेज़ी के साथ विकास किया है | " पर मुख्यमंत्री जी शायद भूल गए की उन देशों के लोगों की बेसिक जरूरतें पूरी होती है और हमारे यहाँ अभी भी करोड़ो लोग बिना रोटी खाये सोते है | कभी इस प्रोजेक्ट का नक्शा बदल कर 21 हज़ार सदाबहार वृक्षो को कटने से बचाने की बात की जाती है | पर यह सिर्फ वन्य जीव प्रेमियों या सक्रियतावादी को शांत करने के लिए आश्वासन है | अगर 21 हजार कटने से बचा रहे हो, पर 40,000 जो कट रहे है, वो उनकी बात नहीं करते | मेरे अनुसार यह सरकार का एक अमानवीय और गैर- जिम्मेंदाराना व्यवहार है | अगर हमें हजारों पेड़ों और वन्य जीवों की लाशों पर ही अपना विकास करना है तो बिना शक हम यह कर सकते है, पर इस विकास की जड़े ना ज्यादा गहरी होगी और ना यह ज्यादा समय तक टिक पायेगा |

महानगरों से पेड़ काटने की वजह से, वह हवा प्रदुषण की मात्रा दिन- ब- दिन बढ़ती ही जाएगी | क्योंकि सिर्फ पेड़ ही हमें बढ़ते प्रदूषण से निजात दिला सकते है |पर पेड़ हमने अपने तुच्छ लालच में आकर काट दिए | और अब बनावटी साधनों के द्वारा प्रंदुषण कम करने की कोशिश की जा रही है | दिल्ली में स्मॉग टावर एयर प्यूरीफायर लगाया गया है | जिसे दिल्ली के लाजपत नगर की सेंट्रल मार्केट में स्थापित कर क्रिकेटर से सांसद बने गौतम गंभीर के द्वारा उंद्घाटन किया गया | यह उनके लिए शायद गर्व की बात होगी | पर सच तो यह है कि यह हमारी मजबूरी और लाचारी को दर्शाता है | अब हमें हवा साफ़ करने के लिए टावर लगाना पड़ रहा है | वो दिन भी दूर नहीं जब हमारी पीठ पर जिम्मेदारियों के बोझ के इलावा एक ऑक्सीजन सिलेंडर भी होगा | गरीबों के लिए यह असंभव होगा | दिल्ली में पहले 70 करोड़ के पेड़ काट कर बेच दिए गए और उस जगह पर उद्योग लगा दिया गया | अब 70 करोड़ की ही लागत से ही एक स्मॉग टावर लगाया जा रहा है | स्मॉग टावर बनाने की तकनीक फ्रांस की है | इसकी ऊचाई 20 फीट है | यह टावर 750 मीटर के क्षेत्र तक रोज़ 2,50,000 से 6,00,000 क्यूंबिक मीटर हवा साफ़ करेंगा | यह टावर २ घंटे के अंदर ही हवा साफ़ करके वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 50 तक ले आता है | सुनने में तकनीक अच्छी लगती है, लोगों को साफ़ हवा मिलेगी, पर हमें यह याद रखना चाहिए की यह स्थाई नहीं है, यह पेड़ो की बराबरी नहीं कर सकता | फ्रीज़ भी ठंडा पानी देता है पर पर्यावरण को दूषित करके |

हमारी यह मानसिकता ही बन गयी है कि अगर पर्यावरण को नुकसान होता है तो होने दो, पर हमारा विकास कार्य नहीं रुकना चाहिए | हम दोनों को बिलकुल विरोधी हालत में देखते है | जहां पानी भी बंद शीशी में बेचा जाता हो, वहाँ अगर हवा भी बिकेगी, तो ज्यादा ताज्जुब नहीं होगा | इतिहास गवा है कि जब- जब हमने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है, उसके हमें घोर नतीजे भुगतने पड़े है | प्रकृतिक आपदाओं से भारी नुकसान का सामना करना पड़ा है | पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के बाद मनुष्य जाति ख़तरे में नज़र आ रही है | आज के समय में हमें साफ़ हवा मुश्किल से नसीब हो रही है | ग्लेशियर पिघल रहे है, जिस कारण नदियों का जलस्तर बढ़ रहा है और कई इलाकों में बाढ़ का ख़तरा मंडरा रहा है | नगरों में भारी ट्रेफिंक के कारण भारी मात्रा में कार्बन उत्सृजन हो रही है | जिस कारण भारत के बड़े शहर अब प्रदूषण की चपेट में आ गए है | नगरों में जनसंख्या घनत्व लगातार बढ़ रहा है, पर हवा का गुणवत्ता सूचकांक लगातार गिरता जा रहा है |

अब हमें यह स्वीकार करना होगा कि पर्यावरण संकट के लिए हम सब जिम्मेदार है | क्योंकि जब तक हम अपनी गलती स्वीकार नहीं करेंगे, हम गलती को सुधार भी नहीं सकते | अगर आज से ही हम आपने पर्यावरण के पुनर्निर्माण में लग जाये तो भी आने वाले 50-60 वर्ष बाद भी यह पहले जैसा नहीं होगा | हमारे नदियों का पानी फैक्ट्रियों के गंदे पानी से लगातार दूषित हो रहा है | पानी में लगातार कैमिक्ल की मात्रा बढ़ रही है | जिस से रोज़ नये रोग पैदा हो रहे है | हम पहले महामारी फैलने का इंतज़ार करते है फिर उसका

इलाज मिलने पर वाहवाही बटोरते है | पर लोगो को इलाज के साथ निजात भी चाहिए | नमामी गंगे परियोजना शुरू होने के बाद भी आज तक गंगा नदी साफ करने का काम पूरा नहीं हुआ है | सरकार के दावे लगातार विफल हो रहे है | सरकार की परियोजना ठंडे बस्ते में दिखाई दे रही है | पर्यावरण से संबंधित कोई भी योजना सफल होती दिखाई नहीं दे रही है | जिस कारण हालत लगातार ख़राब होते जा रहे है |

अगर मानव जाति यह सोचती है कि सिर्फ आर्थिक स्थिति मजबूत होने, युद्ध सामग्री पूर्ण होने से मानव सभ्यता को बचाया जा सकता है, उसकी सभी जरूरतों को पूरा किया जा सकता है, जो उसके जरूरी है तो हम यह गलत सोच रहे है | हम तब तक ही सुरक्षित है, जब तक हम पर्यावरण से साथ जुड़े हुए है | हमें लोभ का चश्मा हटाते हुए, पर्यावरण, वन्यजीव जन्तुओं, वन्य-प्राणियों को भी जीने का हक़ देना होगा, उन्हें कुदरती आवास जो उनका हक़ है उन्हें लौटना होगा | हमें जीओ और जीने दो वाली विचारधारा को अपनाना होगा | हमें पर्यावरण और मनुष्य को क़रीब लाना होगा | आर्थिक विकास और पर्यावरण सुरक्षा में सतुंलन कायम करना होगा | पर्यावरण और वन्य-जीवों की सुरक्षा के लिए सरकार को उचित कदम उठाने होंगे | इनकी सुरक्षा की जरूरत को ध्यान में रखते हुए आयोग का निर्माण करना चाहिए | सड़क दुर्घटना के शिकार हुए जीवों को हम यूं ही तड़पता हुआ नहीं छोड़ सकते | गीर के जंगलों में शेरों की अचानक हुई मौत से सबक लेते हुए, जंगली जीवों के स्वास्थ्य की जाँच होनी चाहिए | राजस्थान में हज़ारों प्रवासी पक्षियों की मौत हो गयी | वन विभाग को इसकी तरफ संज्ञान लेना चाहिए | ताकि इन अचानक होने वाली मौतों में कमी लायी जा सके | लोगों को ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए | सिर्फ पेड़ो के द्वारा ही हम अपने पर्यावरण को हरा-भरा बना सकते है | पेड़ लगाने के कैंपेन स्कूल और कालेजों में आयोजित करने चाहिए | ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को कुछ अच्छा देकर जाये, नहीं तो उन्हें दूषित हवा और जहरीलीं गैंसों के इलावा और कुछ नहीं मिलेगा | समाजसेवी और स्वयसेवी संस्थाएं आगे आकर पर्यावरण सुरक्षा के लिए आगे आना चाहिए | राजस्थान के जोधपुर में बिश्नोई समाज लगातार अपने प्रयास से पर्यावरण सुरक्षा और वन्य-जीवों के लिए कार्य कर रहे है | पर्यावरण सुरक्षा को हमें अपना उद्देश्य बना लेना चाहिए | यह हर उस इंसान का कर्तव्य है, जो साफ़ हवा में साँस लेने की कल्पना करता है |

संदर्भ-सूची

1. राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार
2. द वायरहिंदी (स्रोत इंटरनेट)
3. दैनिक भास्कर - पत्रिका
4. अमर उजाला - पत्रिका
5. ऐनडीटीवी इंडिया - समाचार
6. आजतक - समाचार
7. बीबीसी रिपोर्ट